# प्रलिम्सि फैक्ट्स : 27 फरवरी, 2021

- [झारखंड में एक प्राचीन बौद्ध मठ की खोज]
- [राजा कृष्णदेव राय]

## झारखंड में एक प्राचीन बौद्ध मठ की खोज

## Ancient Buddhist Monastery Found in Jharkhand

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ( Archeological Survey of India- ASI) ने झारखंड की सीतागढ़ी हलि्स के जुलजुल पहाड़ के पास एक टीले के नीचे दफन बौद्ध मठ की खोज की है, जसि कम-से-कम 900 वर्ष पुराना माना जा रहा है।

- इस स्थल के नज़दीक पहले भी एक प्राचीन बौद्ध स्थल इसी तरह के टीले के नीचे दफन पाया गया।

**प्रमुख बदिु:**

**प्राप्त पुरावशेष:**

- वरद मुद्रा (हाथ से वरदान देने का इशारा) में देवी तारा की चार मूर्तियाँ ।
  - **तारा देवी की प्रतमिा पर नागरी लपि:** नागरी देवनागरी लपि का पूर्ववर्ती संस्करण था और इसके शब्द बौद्ध धार्मकि संबद्धता को दर्शाते हैं।
- बुद्ध की छह मूर्तियाँ भूमस्पिर्श मुद्रा में ( दाहनि हाथ की पाँच अँगुलयिों द्वारा पृथ्वी की ओर इशारा, जो बुद्ध के ज्ञान का प्रतीक हैं) प्राप्त हुई हैं।
- एक मूर्तकिुंडलति मुकुट और चक्र के साथ मलिी है जो शैव देवता माहेश्वरी की प्रतीत होती है और इस क्षेत्र में सांस्कृतकि समावेश का संकेत देती है।

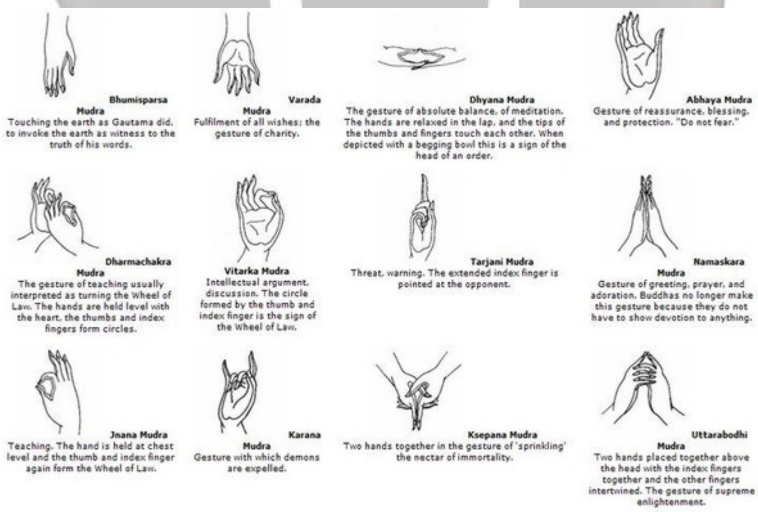


**प्राप्त पुरावशेषों का महत्व:**

- देवी तारा की मूर्तयिों की उपस्थतिइिस क्षेत्र में बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के प्रसार को दर्शाती है।

## वज्रयान:

- वज्रयान का अर्थ है "वज्र का वाहन", जिसे तांत्रिक बौद्ध धर्म के नाम से भी जाना जाता है।
- यह बौद्ध शाखा भारत में लगभग 900 ई. में विकसित हुई।
- यह गूढ़ तत्त्वों पर आधारित है और बाकी बौद्ध शाखाओं की तुलना में एक बहुत जटिल क्रिया पद्धति पर आधारित है।

---

# राजा कृष्णदेव राय

# Vijayanagar King Krishnadevaraya

विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय की मृत्यु की सटीक तिथि से संबंधित पहला शिलालेख कर्नाटक के तुमकुरु ज़िले के होन्नाहल्ली में खोजा गया है।

- आमतौर पर राजाओं की मृत्यु शिलालेखों में दर्ज नहीं की जाती थी परंतु यह शिलालेख दुर्लभ रिकॉर्डों में से एक था।

## प्रमुख बिंदु:

- शिलालेख के अनुसार, भारत के सबसे महान सम्राटों में से एक राजा कृष्णदेव राय जिसने दक्षिण भारत में शासन किया, की मृत्यु 17 अक्तूबर, 1529 (रविवार) को हुई थी।
    - संयोग से इस दिन चंद्र ग्रहण की घटना हुई थी।
- यह शिलालेख तुमकुरु ज़िले के होन्नाहल्ली में गोपालकृष्ण मंदिर के उत्तर की ओर रखे एक पत्थर पर उकेरा गया है।
- यह शिलालेख तुमकुरु के देवता वीरपरासना हनुमंथा की पूजा करने के लिये तुमकुरु के गाँव होन्नाहल्ली द्वारा दिये जाने वाले उपहारों का भी वर्णन करता है।
- इस शिलालेख को कन्नड़ में लिखा गया है।

## राजा कृष्णदेव राय:

- यह विजयनगर साम्राज्य (1509-29 ई.) के तुलुव वंश का शासक था।
- उसके शासन में विस्तार और समेकन संबंधी विशेषताएँ थीं।
- उसे कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्त्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रभावशाली गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है।
- उसने विजयनगर के पास एक उपनगरीय बस्ती की भी स्थापना की, जिसे 'नागालपुरम' भी कहा जाता था।
- उन्होंने तेलुगू भाषा में शासन कला पर आधारित ग्रंथ 'अमुक्तमाल्यदा' की रचना की।

## विजयनगर साम्राज्य:

- विजयनगर या "विजय का शहर" एक शहर और साम्राज्य दोनों का नाम था।
- इस साम्राज्य की स्थापना चौदहवीं शताब्दी (1336 ईस्वी) में संगम वंश के हरिहर और बुक्का ने की थी।
    - उन्होंने हंपी को राजधानी शहर बनाया। वर्ष 1986 में हंपी को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।
- यह उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप के दक्षिण तक फैला हुआ है।
- विजयनगर साम्राज्य पर निम्नलिखित चार महत्त्वपूर्ण राजवंशों ने शासन किया:
    - संगम
    - सुलुव
    - तुलुव
    - अराविडु